कर्मयोग के 12 गुह्य सूत्र

➢➢ आत्म अभिमानी स्थिति (Soul Consciousness)

➳ _ ➳ मैं आत्मा हूँ (कर्म करने की शुरुआत करने से पहले .. पहला संकल्प)

→ यह सब भी आत्माएं हैं

- मुझे इन सभी आत्माओं को सहयोग देना है

➢➢ परमात्म याद (Supreme Soul Consciousness)

➳ _ ➳ बाप के साथ कंबाइंड स्वरुप का अनुभव

➳ _ ➳ वैरायटी प्रकार की नयी ड्रिल

➢➢ बीच बीच में अपने घर जाने का अभ्यास

➳ _ ➳ वह स्थान बहुत अधिक शक्तिशाली है

➳ _ ➳ There should be Home Sickness For Home

→ बार बार घर को मिस करना चाहिए

➳ _ ➳ अब घर जाना है

→ बस यही रट लगी रहे

➢➢ हर कर्म श्रीमत प्रमाण हो

➳ _ ➳ श्रीमत को ताक पर रखकर, दूसरों को खुश करने के लिए जो कर्म किये जाते हैं

→ वह कर्म गिराते हैं

- उससे दोनों ही दुखी होते हैं

➢➢ कर्म और कर्म का परिणाम बाबा को समर्पित / Surrender

➳ _ ➳ सफलता और असफलता दोनों समर्पित

→ किसी सफलता के लिए कोई स्तुति की भीख नहीं चाहिए

- हमारा वहा automatically जमा हो गया है

→ किसी के द्वारा निंदा किये जाने पर बिलकुल भी दुखी नहीं

➢➢ Selfless (निस्वार्थ / निष्काम) भाव से की गयी सेवा

➳ _ ➳ अपने द्वारा की गयी सेवा का प्रचार मत करो

→ सेवा की और भूल गए

➢➢ त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर की गयी सेवा

➳ _ ➳ पहले ही अच्छे से सोच विचार कर लीजिये की

→ इस कर्म का भविष्य में क्या परिणाम निकलेगा ?

➳ _ ➳ अगर अब 10 बजे Net चलाऊँगा तो क्या उसका effect सुबह अमृतवेला पर नहीं पड़ेगा ?

➢➢ अथक होकर की गयी सेवा / Tireless

➳ _ ➳ सेवाओं में थकान तब होती है

→ जब सेवाओं में व्यर्थ चलाता है

■ देह अभिमान थकाता है

➳ _ ➳ जो दूसरों को संगम युग पर अपना दास दासी बनाते हैं

→ वह सतयुग में खुद दास दासी बन जाते हैं

■ संगम युग में महाराजा / महारानी बनकर नहीं रहना है

➢➢ अटेंशन

➳ _ ➳ जागरण की अवस्था में हर कर्म करें

➢➢ एक्यूरेसी

➳ _ ➳ योगी का हर कर्म बिलकुल परफेक्ट होता है

→ कोई गलतियां / लापरवाही नहीं होती

➳ _ ➳ अपनी जिम्मेवारियों को न निभा पाने के

→ आध्यात्मिक कारण मत बताइए

➢➢ निमित भाव / Instrument

➳ _ ➳ मैं निमित हूँ

→ इस बात का अभिमान भी नहीं होना चाहिए

➳ _ ➳ अगर वो चाहे तो किसी और को निमित बना दे

→ यह मेरी खुशकिस्मती है की उसने मुझे निमित बनाया

➳ _ ➳ मैं तो सिर्फ नल हूँ

→ पानी तो टंकी में से आ रहा है

■ वह पानी किसी और नल से भी आ सकता है

➢➢ Detachment

➳ _ ➳ स्वयं को हर कर्म से Detach रखिये

➳ _ ➳ सेवाएं करते करते सेवाधारियों के साथ दोस्ती बनाकर नहीं रखनी

➢➢ साक्षी भाव / Detached Observership

➳ _ ➳ हर आत्मा का अपना पार्ट है

→ सभी कठपुतलियाँ हैं

- इस World Screen पर एक बहुत बड़ी फिल्म चल रही है

➳ _ ➳ जैसे बाबा को सब कुछ मालूम है की कहाँ गड़बड़ हो रही है

→ पर फिर भी बाबा कहीं Interfere नहीं करता